प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ१९६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- ८६ भोपाल, ८ अक्टूबर, डाक ९ अक्टूबर २०२५ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

कट्टरपंथ ने धधकाई हिंसक ज्वाला। न्यायाधीश पी गए जहर का प्याला।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-२९२

कैलाश आदमी

कट्टरपंथी संगठनों के बढ़ते प्रचार-प्रसार का समाज पर इतना दुष्प्रभाव पड़ रहा है कि अब ना केवल अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे बल्कि स्वयं को अतिबुद्धिजीवी मानने वाले लोग भी इसका शिकार हो रहे हैं।

मैं इस स्तंभ के अंतर्गत हिंदुओं के सबसे बड़े कट्टरपंथी संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का विशेषोल्लेख करता रहा हूं क्योंकि इसके पदाधिकारी ही नहीं छोटे-मोटे स्वयंसेवक भी यह प्रचार करते हुए नहीं अघाते की उनका संगठन दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है और केवल बड़ा ही नहीं बल्कि राष्ट्र प्रेम, त्याग, सेवा और समर्पण की भावना से ओतप्रोत है। मैं इस संगठन का पिछले कुछ दिनों से इसलिए उल्लेख करता चला आ रहा हूं क्योंकि इस संगठन की ओर से कहा जा रहा है कि उसका १०० वर्ष का गौरवशाली इतिहास रहा है और अगली शताब्दी भर संघ अपना गौरवगान करेगा जिसका आरंभ विगत दो अक्टूबर को हो चुका है। यह दिन इसलिए ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन संघ और उससे जुड़े शुरुआती संगठनों यथा हिंदू महासभा और रामराज्य परिषद की विचारधारा से प्रभावित होकर ही नाथूराम गोडसे जैसे युवा ने महात्मा गांधी की हत्या की थी और इसी संघ ने आजादी के बाद कुछ दिनों तक तो हिंदू महासभा और रामराज्य परिषद को बैशाखी बनाया और फिर भारतीय जन संघ नामक पृथक राजनीतिक दल खड़ा कर दिया। संघ की ओर से यह झूठ प्रसारित किया जाता है कि यह संगठन राजनीति से दूर रहता है जबकि इसकी ओर से ना केवल जनसंघ बल्कि आगे चलकर जनता पार्टी में जनसंघ को विलीन करने का नाटक किया गया और फिर जनता पार्टी का लाभ उठाते हुए भारतीय जनता पार्टी नामक नए राजनीतिक दल का सूत्रपात किया गया जिसमें सर्वाधिक प्रभावशाली पद महामंत्री (संगठन) का होता है। यही नहीं जब केंद्र में कांग्रेस को बहुमत नहीं मिला और भाजपा को मिलीजुली सरकार बनाने का अवसर मिला तो संघ ने अटल बिहारी वाजपेयी जैसे प्रचारक को प्रधानमंत्री पद पर बिठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब २०१४ में कांग्रेस को लोकसभा में बहुमत नहीं मिला तो संघ के प्रचारक रहे नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद पर बिठाया गया।

श्री मोदी देश के ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने इस पद का दुरूपयोग करते हुए लालकिले से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शताब्दी काल का गुणगान किया तथा नई दिल्ली में आयोजित शताब्दी समारोह में सम्मिलित हुए और ऐसा सिक्का जारी किया जिसमें महात्मा गांधी की जगह कल्पित भारत माता को शेर पर सवार दिखाते हुए उसके हाथ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का भगवा झंडा थमा दिया गया। यही नहीं इस माता के सामने संघ के ३ स्वयं सेवकों को संघ की मुद्रा में आराधना करते हुए दर्शाया गया।

यह सभी जानते हैं कि संघ की रीति-नीति व दिशा निर्देशों के अनुरूप मोदी सरकार काम कर रही है जिसका मुख्य सूत्र यह है कि भारत के वर्तमान संविधान को निरस्त कर मनु स्मृति आधारित नया संविधान लागू किया जाए और ऐसा राजतंत्र स्थापित हो जिसमें विपक्ष की भूमिका ना रहे। यदि कोई भूमिका हो तो विपक्ष के मतों का कोई महत्व ना रहे। श्री मोदी संघ के सुर में सुर मिलाते हुए कांग्रेसमुक्त अर्थात विपक्षमुक्त लोकतंत्र का नारा लगाते रहे हैं और इसकी पूर्ति हेतु वे एकराष्ट्र, एक चुनाव की भूमिका बना चुके हैं। चूंकि चुनाव आयोग इस पुण्य कार्य में आडे आ रहा था इसलिए मोदी सरकार ने यह व्यवस्था कर दी कि आयोग का मुखिया भाजपा के सुर में सुर मिलाने वाला ही रहे। बिहार में मतदाता पुनरीक्षण की आड़ में भाजपा का ही पुष्ट पोषण किया गया तथा आगे अन्य राज्यों में भी ऐसा ही करने का ऐलान आयोग के मुखिया कर चुके हैं। अब यदि कोई आडे आ सकता है तो वह है भारत का सर्वोच्च न्यायालय। मोदी सरकार अभी तक न्यायालय के न्यायाधीशों को संघ-भाजपा उन्मुख करने में सफल नहीं हो सकी है।

"राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की करतूतों से व्यक्तिगत हत्या और हिंसा का वातावरण निर्माण हुआ। और उसी के कारण गांधीजी की हत्या हुई।"
-सरदार पटेल

वर्तमान मुख्य न्यायाधीश श्री गवई ने हाल ही एक याचिका निरस्त करते हुए कहा कि याचिकाकार ने खजुराहो के एक मंदिर में स्थित विष्णु भगवान की खंडित मूर्ति में सिर लगाने का अनुरोध किया है वह पूरा नहीं किया जा सकता क्योंकि यह कार्य पुरातत्व विभाग के अधीन आता है। जब याचिकाकार की ओर से ज्यादा जोर दिया गया तो श्री गवई ने कहा कि यदि उनकी भगवान में इतनी ही आस्था है तो भगवान ही यह कार्य कर सकते हैं। वे इसके बाद मॉरीशस गए तो उन्होंने वहां कर दिया कि भारतीय न्याय व्यवस्था बुल्डोजर से नहीं चलती। श्री गवई के खासकर खजुराहो मंदिर वाले बयान से असंतुष्ट सर्वोच्च न्यायालय के एक अधिवक्ता राकेश किशोर ने गत दिवस भरी अदालत में अपना स्पोर्ट्स शू उतारकर आसंदी की ओर फेंका। इस पर मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि इस घटना से उन पर कोई फर्क नहीं पड़ा है और इसी कारण उन्होंने अधिवक्ता की गिरफ्तारी का आदेश नहीं दिया।

पुलिस ने अधिवक्ता को गिरफ्तार कर लिया था लेकिन श्री गवई के रुख को देखते हुए उसे छोड़ दिया गया किंतु अदालत के बाहर आकर अधिवक्ता ने कहा कि वह मुख्य न्यायाधीश के रवैए से दुखी हुआ और उसके मन में आया कि वह सनातन धर्म का अपमान बर्दास्त नहीं कर सकता। उसने नारा भी उछाला- सनातन धर्म का अपमान, बर्दास्त नहीं करेगा हिंदुस्तान। यद्यपि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने घटना पर दुख जताया किंतु सर्वोच्च न्यायाधीश पर जूता फेंककर की गई देशद्रोही हरकत पर संघ की चुप्पी ने कुछ और ही संकेत दिया।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-
कट्टरपंथी ने धधकाई हिंसक ज्वाला।
न्यायाधीश पी गए जहर का प्याला।।

पुस्तकों से झलकती संस्कृति

चंचलिका शर्मा

हम संस्कारी तभी बनेंगे जब हम हमारी संस्कृति से जुड़े होंगे । हमारे संस्कार की शुरुआत घर से होती है। माता पिता, दादा दादी, नाना नानी से हमें संस्कार अर्थात हमारे बोलचाल के तरीके, बड़ों को सम्मान, छोटों को स्नेह, प्यार देना हम घर से ही मिलती है।

आगे चलकर हम पुस्तकों से जुड़ते हैं। अलग अलग विषय, अलग अलग जानकारी। हमारी भारतीय संस्कृति अतुल्य है। जब हम इतिहास को पढ़ते हैं तो देश के विभिन्न जाति, धर्म के मर्म को पढ़ते हैं, जानकारी प्राप्त करते हैं। आज भी भारत में अनेक ऐतिहासिक स्थान है जहाँ हमें हमारी पौराणिक संस्कृति के चित्र, मूर्ति गवाह देते हैं कि भारत एक सुसम्पन्न देश है जिसकी संस्कृति अक्षुण्ण हैं।

जब हम दार्शनिक किताबों को पढ़ते हैं तो दर्शन शास्त्र अनेक छुपे हुए रहस्य को उजागर करते हैं। रामकृष्ण परमहंस जी को किताबी ज्ञान तो नहीं था मगर वे साक्षात काली माता के सच्चे साधक थे। काली माता से वे इस तरह कभी कभी रुठते थे जैसे कोई बच्चा अपनी माता से रुकता है। खुद खाते और अपना जूठा खाना माँ को खिलाते थे ठीक उसी तरह जैसे शबरी ने जूठे बेर श्री रामचन्द्र को खिलायी थी।

कई ग्रंथालयों में न जाने कितनी किताबें हैं जिनको पढ़े बिना पूर्णतः अपने देश की संस्कृति जान ही नहीं पायेंगे। कई ऐतिहासिक स्थलों में अथवा पुराने मंदिरों के दीवारों चित्र के माध्यम से पुरानी संस्कृति को समझाने की कोशिश की गई है। उस समय के चित्रकार किस तरह बिन कहे, बिन लिखे ही चित्रों के माध्यम से हमें हमारी संस्कृति को उजागर किया है।

बनारस में तुलसी मानस मंदिर में तुलसी दास जी द्वारा लिखे रामायण के दोहे, छंद दीवारों पर सचित्र वर्णन देखने को मिलते हैं।

हम मानव हमेशा ही देश के कई पुराने रहस्य को आज भी पढ़ने, जानने के लिए व्याकुल हैं। सच कहा जाये तो पुस्तकों से करीबी दोस्त और कोई भी नहीं। पढ़ने में लीन रहने वाले लोगों को मानों दिन दुनिया से कोई वास्ता ही नहीं।

आज के वैश्विक युग में जिस तरह नये नये आविष्कार हो रहे हैं उस पर भी हमारी संस्कृति की छाप तो रची बसी ही है। आगे चलकर यही वैज्ञानिक खोज, गवेषणा इतिहास बनकर आने वाली पीढ़ी को कुछ करने की जिज्ञासा को हल करने कौ बाध्य करेगी। पीढ़ी दर पीढ़ी में समय के बदलाव के साथ साथ संस्कार में भी बदलाव आ रहा हैं, जिसको पिछली पीढ़ी को स्वीकार करना ही पड़ेगा क्यों कि गति शील समय के साथ अगर हम कदम नहीं मिला पायेंगे अथवा जागरूक नहीं होंगे तो हम पीछे ही रह जायेंगे। दरअसल कोई भी कितना भी पढ़ ले वह सम्पूर्ण ज्ञानी कभी नहीं बन सकता क्यों कि माँ सरस्वती की कृपा से हम कुछ हद तक तो हम पढ़ लिखकर हमारी संस्कृति को जान पाये हैं मगर न संस्कृति में ठहराव आयेगी और न ही किताबों का अंत होगा। तभी तो कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है।

अच्छी पुस्तकों से संकृति की झलक मिलती है और हमारी संस्कृति से हमारे संस्कार दिखाई देते हैं। यही संस्कार, संस्कृति, पुस्तकें हर इंसान के व्यक्तित्व को रचते हैं, गढ़ते हैं, हमारी पहचान बनाते हैं।

- बड़ोदरा

महिला बाल विकास विभाग में लोकायुक्त का छापा, अधिकारी रंगे हाथों गिरफ्तार

निर्दलीय संवाद

जुन्नारदेव। महिला एवं बाल विकास विभाग के जुन्नारदेव कार्यालय में आज लोकायुक्त पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक अधिकारी को रंगे हाथ रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया है।

जानकारी के अनुसार, विभाग के एक कार्यकर्ता से अधिकारी सीमा पटेल द्वारा 50 हजार रुपये की रिश्वत मांगी गई थी। कार्यकर्ता ने इस शिकायत की सूचना लोकायुक्त कार्यालय जबलपुर को दी। शिकायत को सत्यापित करने के बाद लोकायुक्त टीम ने योजना बनाकर ट्रैप की कार्रवाई की।

जब आरोपी अधिकारी पहली किस्त के रूप में 20,000 रुपये की राशि ले रही थी तभी लोकायुक्त टीम ने मौके पर दबिश दी और उसे रंगे हाथ पकड़ लिया।

कार्रवाई के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यालय में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। लोकायुक्त टीम ने आरोपी अधिकारी सीमा पटेल एवं अन्य तीन महिला सुपरवाइजर से पूछताछ की और कार्यालय से संबंधित दस्तावेज़ एवं मोबाइल रिकॉर्ड भी जब्त किए हैं।

सूत्रों के मुताबिक, यह रिश्वत विभागीय कार्यों को आगे बढ़ाने और भुगतान स्वीकृति के एवज में मांगी गई थी। लोकायुक्त टीम द्वारा फिलहाल आरोपी अधिकारी को हिरासत में लेकर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

इस घटना के बाद क्षेत्र में भारी चर्चा का विषय बना हुआ है कि सरकारी दफ्तरों में रिश्वतखोरी का जाल अब भी कितना गहराई तक फैला हुआ। आगे की करवाई जा रही है।

नागरिक बोध की मिसालों का अभाव

मनोरमा पंत

आज का भारत विकसित देशों की होड़ में अग्रसर है ।समय के साथ-साथ नागरिकों की जीवन स्तर भी बढ़ा है और साथ ही बढ़ी है क्रय शक्ति । कम ब्याज पर किस्तों में वाहन मिलने लगे हैं ।अतः स्कूटर, मोटर साइकिल जैसे वाहन आम आदमी की जद में आ गये हैं। अब मध्यवर्गीय आदमी भी कार रखने की हैसियत रखने लगा है जिसके फलस्वरूप सड़कों पर वाहन की भीड़ बढ़ती जा रही है। ये सब बातें प्रशंसनीय है पर परेशानी की बात यह है कि शहरों की हर सड़क पर वाहनों की भीड़ बढती जा रही है । घंटो ट्रेफिक जाम रहता है ।

अभी भारत में भारी बारिश हो रही है, टूटी सड़कों और कीचड़ तथा भारी ट्रेफिक जाम से आमजन त्रस्त है। मिनटों के सफर में घंटों लग जाते हैं, गम्भीर अवस्था में पहुँचे मरीज इस जाम में फँसने की वहज भी अपनी जान भी गवा सकते हैं जैसा कि इन्दौर में हुआ। जाम में फंसते ही हम चिड़चिड़ा जाते हैं, झल्लाने पर इस जाम से छुटकारा पाने की पहल नहीं करते ।करें कैसे हममें नागरिक बोध है ही नहीं । आइये, नागरिक बोध के उदाहरण पहले पढ़े फिर आत्ममंथन करें।

मिजोरम के आइजोल में नो हार्न (४ सितम्बर २०२५) की बड़ी खबर आश्चर्यजनक तो लगी पर साथ में कौतूहल भी बराबर रहा है कि सड़कों पर बिना किसी चिन्ह या चौराहों के ,लोग लम्बी कतारों में अपनी बारी का इंतजार करते है। वे हार्न नहीं बजाते, वे अपना धैर्य नहीं खोते ।इसका एकमात्र कारण है नागरिक कर्तव्य का भाव। इसी नागरिक बोध के कारण वहाँ की संस्कृति में मृदुता, शांति एवं सहयोग की भावना का रंग धुला है।

आप दुनिया के किसी भी पश्चिम देश में चले जाए, नागरिक बोध वहाँ अवश्य दिखेगा। यातायात के नियमों का पालन सहज भाव में पालन करते लोग दिखेंगे। रेलवे स्टेशन पर कतार में लगे लोग बूढ़े, अपाहिज लोगों की सहायता करते लोग हम भारतीय का ध्यान आकर्षित कर जाते हैं। इसके विपरीत हमारे देश में हर जगह धक्का मुक्की एवं अव्यवस्था का माहौल दिखाई देगा ।भोपाल में यातायात नियमों के उल्लंघन में एक ही दिन में ७७ हजार रुपए की वसूली की गई ।

धार्मिक स्थलों पर जमी भारी भीड़ में हमेशा ही अराजकता फैलने से मची भगदड़ में लोग मरते रहते हैं, कुचलते रहते हैं।यह स्थिति भीड़ प्रबंधन की असफलता या अव्यस्था से तो होती है ,पर साथ ही अफवाहों के कारण भी भगदड़ में लोग,घायल हो जाते हैं या मर जाते हैं। महाकुंभ में मची भगदड़ में कुचल कर मरे लोगों को हम भूल नहीं सकते। इसी प्रकार ४-जून को बंगलुरू में आइपीएल में रायल चैलेजर्स का विजय जुलूस का जश्न मातम में बदल गया। भारी भीड़ अव्यवस्था और सुरक्षा के अभाव में तीन लोग मारे गये।

मध्यप्रदेश के सीहोर में कुबेरश्वर धाम में अनेकानेक घायल हुए और दो महिलाएं मारी गई। प्रति वर्ष भारत में भारी भीड़ से उत्पन्न में भगदड़ में लोग कुचलते रहते हैं, मरते रहते हैं पर उससे सबक नहीं लेते। सीधी सी बात है देश में नागरिक बोध नहीं। पीछे हैं तो आगे बढ़ने के लिये धक्का मुक्की करते हैं। लोग गिरे, कुचले कोई फर्क नहीं पड़ता।

शहरों को साफ रखने के लिये सरकारें भरसक प्रयत्न करती हैं। जगह जगह कूड़ादान रखती है। हर घर से कचरा उठवाती है, पर लोग सहयोग नहीं करते। सड़कों पर कचरा फेंकते हैं नदी, तालाबों में भी इससे अछूते नहीं है। कचरा तथ पूजन सामग्री से जल स्त्रोत प्रदूषित होते रहते हैं। पूरे शहर का गंदा पानी भोपाल के ताल में मिल रहा है।

सबै भूमि गोपाल की तर्ज पर कहीं भी अतिक्रमण किये जाते हैं। जरा जरा सी बात पर हत्याऐं होती रहती है, बलात्कार होते रहते हैं, पर हम नागरिक मौन है। हममें गलत बात का प्रतिकार करने की क्षमता नहीं है। हममें नागरिक बोध नहीं है। हम सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट करते हुए देखते हैं पर चुप रहते हैं। पेड़ों को कटते हुए देखकर भी मौन रहते है।

साम्प्रदायिकता फैलाने वाले विष भरे बोलों का विरोध नहीं करते। हम तटस्थ रहने की नीति पर अमल करते हुए अपने आप को सुरक्षित समझते हैं। तो सोचिये कैसे समाज और देश में शुचिता आएगी, कैसे कानून व्यवस्था सुचारू रूप से चलेगी। कम से कम अपने बच्चों में तो नागरिक बोध के बीज अंकुरित करे। विकसित देश की तड़क भड़क वाली संस्कृति अपनाने वाले भारत देश वहाँ के नागरिक बोध का अनुगमन भी तो करे ।

एक प्रमुख समाचार पत्र में ७ सितम्बर को प्रकाशित सीएसई की रिपोर्ट के अनुसार करोड़ों खर्च होने के बाद भी मध्यप्रदेश की प्रमुख नदियाँ दम तोड़ रही है। दुख की बात है कि जिनमें पतितपावनी नर्मदा जैसी जीवन रेखा भी है। सर्वे बतलाते हैं कि उसमें २२ लाख लोगों का सीवेज घुल रहा है। इसका पानी सिर्फ जंगली जानवरों के लिये उपयुक्त माना गया है। बिना शुद्धिकरण किया गया सीवेज, अवैध खनन, कृषि में इस्तेमाल हो रहे रसायन मुख्य कारण है, जिनसे नदियों का पानी नहाने योग्य भी नहीं रहा। नदियों के प्रदूषण में धार्मिक आस्था भी भारी पड़ती है। प्रतिमाओं का ,फूल पत्तियों का विर्सजन/शवों का नदियों में बहाना अब बहुत भारी पड़ रहा है।

जापान में बाढ़ग्रस्त सड़कों पर बहने वाला पानी भी काँच के समान साफ रहता है । कारण है नागरिक बोध ।पानी को साफ रखना वहाँ के नागरिक नैतिक जिम्मेदारी मानते हैं ।याद रखे नागरिक बोध के अभाव में हम विकसित देशों से पीछे ही रहेगे ।इसके लिए जरूरी स्वप्रेरणा और देश के प्रति प्रेम।

-भोपाल

७ अक्टूबर को मोहम्मदी में होने वाले समारोह में विकास मिश्र होंगे गोमती साहित्य सम्मान २०२५ से सम्मानित

निर्दलीय संवाद

दिल्ली। उत्तर प्रदेश के जनपद लखीमपुर खीरी के कस्बे मोहम्मदी में कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद जो भारत की प्रतिष्ठित संस्था है के द्वारा अंतरराष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन व सम्मान समारोह का आयोजन ७ अक्तूबर को आयोजित किया जायेगा।

विगत ३ वर्षों में ५० से अधिक साहित्यकार इस सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कृष्णा राज पूर्व कृषि राज्य मंत्री शामिल होगी। विशिष्ट अतिथि के रूप में लोकेंद्र प्रताप सिंह सभापति(राज्यमंत्री) एवं पंचायती राज समिति यू पी एवं संदीप मेहरोत्रा, चेयरमैन नगर पालिका परिषद शामिल होंगे। नवोदित से वरिष्ठ तक सभी चयनित को यह सम्मान प्रदान किया जाता है। संस्था अध्यक्ष गोविंद गुप्त ने बताया कि इस वर्ष भी पूरे देश से चयन किया गया है।कार्यक्रम में विदेश से भी एक प्रतिनिधि के उपस्थित रहने की संभावना है।इस वर्ष कार्यक्रम प्रो.सुदीप कुमार जो पी जी आई में प्रोफेसर थे उनकी स्मृति में आयोजित है जो कथाकुंज के संरक्षक थे।

अभी प्रो. सुदीप कुमार की धर्म पत्नी डॉ नीमा पंत जी जो कथा कुंज साहित्य परिषद की ब्रांड एंबेसडर भी है। इसके अतिरिक्त वो एक कवयित्री, लेखिका एवं मोटिवेशनल स्पीकर भी है।

पुरुषों में गोमती सम्मान से सम्मानित होने वाले कवियों में विकास मिश्र ग्राम नटोली कलां ब्लॉक कूरेभार, सुल्तानपुर यू पी के निवासी है।वह वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री वेंकटेश्वर कॉलेज में कार्यरत हैं। पूर्व में वो राम राजी डिग्री कॉलेज वैदहा में राजनीति विज्ञान के सहायक प्रोफेसर थे, उससे पहले वह शास्त्री बाल विद्या मंदिर मोतीगंज में अंग्रेजी विषय के प्रवक्ता थे। सुदनापुर बाजार में आकाश कोचिंग सेंटर के प्रबंधक भी रहे है। कोरोना काल के समय से विकास मिश्र कविताएं लिखते है तथा अनेक साहित्यिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए है। अखिल भारतीय काव्य मंच मुंबई जिसके वह सचिव एवं प्रवक्ता है।वह पत्रकारिता से भी जुड़े है । दि ग्राम टुडे हिंदी दैनिक समाचार पत्र में उप संपादक और संस्कार न्यूज में भी वह संवाददाता है।कविता लेखन के साथ वह मंचों पर अच्छा संचालन भी करते है। इस कार्यक्रम के आयोजक एवं कथा कुंज साहित्य परिषद संस्था के संस्थापक समाजसेवी गोबिंद गुप्ता ने मीडिया को बताया ये चयन पूरी तरह से कवि और कवयित्री के साहित्य के प्रति योगदान, उनकी कविताएं और सोशल मीडिया पर दर्शकों और श्रोताओं की उनकी कविताओं पर प्रतिक्रियाएं देखकर कथा कुंज साहित्य परिषद की टीम द्वारा चयन किया गया है।

गोमती साहित्य सम्मान २०२५ के लिए चयनित होने पर विकास मिश्र ने कहा कि मै इसके लिए अपनी माता शांती देवी और पिता स्वर्गीय भगवती प्रसाद मिश्र,अपने चाचा शेष नारायण मिश्र,अपने साहित्यिक प्रेरणास्त्रोत श्री पवन कुमार पाण्डेय जी और बहन किरन पाण्डेय और अपनी संस्था अखिल भारतीय काव्य मंच के संस्थापक और राष्ट्रीय अध्यक्ष अंजनी द्विवेदी को देता हूं।